विदेशों में हिंदी भाषा का गुणगान

- **सांची विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया ऑनलाइन व्याख्यान**
- **स्विटज़रलैंड के लूज़ेन विश्वविद्यालय के डॉ. निकोला का विशिष्ट व्याख्यान**
- **विदेशों में हिंदी भाषा का प्रशिक्षण" विषय पर व्यख्यान**
- **'संस्कृत विश्व की कई भाषाओं की जननी है'**

सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस पर आज "विदेशों में हिंदी भाषा का प्रशिक्षण" विषय पर ऑनलाइन व्यख्यान आयोजित किया गया। स्विटज़रलैंड के लूज़ेन विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई एवं स्लाविक विभाग के डॉ. निकोला पोज़ा ने मुख्य अतिथि के तौर पर अपने अनुभव साझा किए।

सांची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने अपने वकतव्य के दौरान कहा कि संस्कृत भारतीय भाषाओं के अलावा विश्व की कई अन्य भाषओं की जननी है।

डॉ. निकोला पोज़ा ने अपना पूरा व्याख्यान हिंदी में ही दिया। उन्होंने बताया कि यूरोप और दूसरे देशों में हिंदी भाषा के लिए कैसे प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने भारत में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हिंदी विषय में ही पढ़ाई की है। उन्होंने दिल्ली में रहने के दौरान हासिल अनुभवों को साझा किया और इसे 'ज़ोये और लूका' की काल्पनिक कहानी के रूप में अभिव्यक्त किया।

डॉ. निकोला ने बताया कि स्विटज़रलैंड के लूज़ेन विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग 1971 में स्थापित किया गया था। जबकि संस्कृत भाषा का विभाग 1903 में ही यहां स्थापित किया जा चुका था। डॉ. पोज़ा ने कहा कि लूज़ेन विश्वविद्यालय में आधुनिक हिंदी भाषा के कवि निराला, अज्ञेय और अन्य को बेहद शौक से पढ़ा जाता है।

डॉ. निकोला ने बताया कि हिंदी भाषा के विभिन्न विषयों पर यूरोप के अन्य देशों जैसे पोलैंड, रोमानिया, इटली के अलग-अलग विश्वविद्यालयों में गर्मियों में हर साल कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।